Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बहुविकल्पी प्रश्न

1. भारत में प्रिंटिंग प्रेस सबसे पहले कहाँ स्थापित किया गया?

(अ) पंजाब में (ब) गोवा में

(स) मुंबई में (द) कोलकत्ता में

2. तुलसीदास द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' का प्रथम मुद्रित संस्करण कहाँ से प्रकाशित हुआ—

(अ) अहमदाबाद (ब) बम्बई

(स) मद्रास (द) कलकत्ता

3. किसके छपे हुए लेखों के कारण यूरोप में धर्म-सुधार आन्दोलन शुरू हुआ—

(अ) मार्टिन लूथर (ब) दिदरो

(स) कॉल्विन (द) इरैस्मस

4. राधाकांत देव किसके संस्थापक थे?

(अ) प्रार्थना सभा (ब) धर्म सभा

(स) हिन्दू सभा (द) आर्य सभा

5. रामचरितमानस पुस्तक का पहला मुद्रित संस्करण कब छापा गया?

(अ) 1801 में (ब) 1800 में

(स) 1805 में (द) 1810 में

6. तुलसीदास की 'श्रीरामचरितमानस' का पहला मुद्रित संस्करण कलकत्ता से प्रकाशित हुआ—

(अ) सन् 1812 में (ब) सन् 1810 में

(स) सन् 1815 में (द) सन् 1809 में

7. योहान गुटेन्बर्ग ने पहली मुद्रण तकनीक का विकास किया —

(अ) 1430 के दशक में (ब) 1420 के दशक में

(स) 1450 के दशक में (द) 1440 के दशक में

8. मार्को पोलो खोजी यात्री चीन में काफी वर्षों तक खोज करने के बाद इटली वापस लौटा—

(अ) 1295 ई. (ब) 1285 ई.

(स) 1265 ई. (द) 1275 ई.

9. फ्रांस में बाल-पुस्तकें छापने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया—

(अ) 1857 में (ब) 1867 में

(स) 1847 में (द) 1837 में

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

10. **'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक के लेखक का नाम क्या है?**

(अ) जयदेव (ब) कालिदास

(स) दयानंद सरस्वती (द) प्रेमचंद

रिक्त स्थान :

11. _____ को पेरियार के नाम से भी जाना जाता था?

12. भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस _____ में 1556 ईस्वी में स्थापित हुआ था।

सत्य / असत्य

13. जोहान गुटेनबर्ग ने यूरोप में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया था।

14. 19वीं सदी में भारत में प्रिंटिंग प्रेस केवल अंग्रेज़ी भाषा में ही पुस्तकों का मुद्रण करता था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. कौन सा धर्म सुधारक प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार के लिए उत्तरदायी था ?

16. वुडब्लॉक प्रिंटिंग की तकनीक यूरोप में कौन लाया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. "मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रची थीं।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

18. मार्टिन लूथर कौन था? धार्मिक बहस को प्रारम्भ करने के लिए उसने मुद्रण कला का उपयोग किस प्रकार किया?

निबंधात्मक प्रश्न

19. हस्तलिखित पांडुलिपियों की सीमाएँ बताइए।

20. महिलाओं पर मुद्रण संस्कृति के प्रभाव को विस्तार से बताइए।

HOTS

21. मार्टिन लूथर ने क्यों कहा, मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफ़ा।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. (ब) भारत में सबसे पहले प्रिंटिंग प्रेस 16वीं सदी में गोवा में स्थापित किया गया।
2. (द) कलकत्ता
3. (अ) मार्टिन लूथर
4. (ब) राधाकांत 'धर्म सभा' के संस्थापक थे। इसकी स्थापना का समय 1829-30 माना जाता है।
5. (द) तुलसीदास के रामचरितमानस का पहला मुद्रण संस्करण कलकत्ता में 1810 में छापा गया था।
6. (ब) सन् 1810 में
7. (अ) योहान गुटेन्बर्ग ने पहली मुद्रण तकनीक का विकास 1430 के दशक में किया।
8. (अ) मार्को पोलो खोजी यात्री चीन में काफी वर्षों तक खोज करने के बाद 1295 ई. में इटली वापस लौटा।
9. (अ) 1857 में फ्रांस में बाल-पुस्तकें छापने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया।
10. (स) 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक दयानंद सरस्वती द्वारा लिखी गई हैं।
11. **रिक्त स्थान :** ई० वी० रामास्वामी नायकर
12. **रिक्त स्थान :** गोवा
13. **सत्य / असत्य :** सत्य
14. **सत्य / असत्य :** असत्य
15. मार्टिन लूथर धर्म सुधारक प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार के लिए उत्तरदायी था।
16. वुडब्लॉक प्रिंटिंग की तकनीक यूरोप में मार्को पोलो द्वारा लाई गई।
17. छपाई के चलते ज्ञानोदय से वॉल्टेयर और रूसो जैसे चिन्तकों के विचारों का प्रचार-प्रसार हुआ।
    सामूहिक रूप से उन्होंने परम्परागत, अन्धविश्वास और निरंकुशवाद की आलोचना प्रस्तुत की। उन्होंने 'तार्किकता' का प्रचार-प्रसार किया। इसने लोगों को राजशाही के विरुद्ध विद्रोह हेतु प्रेरित किया।
    मुद्रण ने समस्त पुराने मूल्यों, संस्थाओं और नियमों पर आम जनता के मध्य बहस-मुबाहिसे और धार्मिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श का मार्ग प्रशस्त किया। कार्टूनों और कैरिकेचरों (व्यंग्य चित्रों) में यह भाव सामने आता था कि जनता तो मुश्किल में फँसी है जबकि राजशाही भोग-विलास में डूबी हुई है। इसने क्रान्ति की ज्वाला भी भड़काई। स्पष्ट है कि "मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रची थीं।"
18.
    i. मार्टिन लूथर एक धर्म-सुधारक था। उसने 1512 ई० में रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 'पिचानवे स्थापनाएँ' लिखीं और मुद्रण कला के प्रयोग से छपवाकर प्रकाशित किया।
    ii. इसकी एक प्रकाशित प्रति बिटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर टाँगी गई।
    iii. इसमें उसने चर्च शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी।
    iv. जल्दी ही लूथर के लेख बड़ी संख्या में छापे और पढ़े जाने लगे।
    इसके परिणामस्वरूप चर्च में विभाजन हो गया और प्रोटेस्टेण्ट धर्म सुधार की शुरुआत हुई।
19.
    i. हस्तलिखित पांडुलिपियां नाजुक और काफी महँगी होती थीं।
    ii. उन्हें बड़ी सावधानी से पकड़ना पड़ता था तथा अलग-अलग तरीके से लिखी हुई होने के कारण उन्हें पढ़ना भी आसान नहीं था।
    iii. उनका दैनिक प्रयोग बहुत कम होता था।
20. महिलाओं पर मुद्रण संस्कृति के प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है -

100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

i. **महिला शिक्षा -** मुद्रण संस्कृति के प्रसार से लेखकों ने महिलाओं के जीवन एवं भावनाओं पर लिखना प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप महिला पाठकों की संख्या में वृद्धि होने लगी। वे शिक्षा में रुचि लेने लगीं। महिलाओं के लिए नए स्कूल खोले गए। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। कई पत्र-पत्रिकाओं ने नारी शिक्षा के महत्त्व की चर्चा करना प्रारम्भ कर दिया।

ii. **महिला लेखिकाएँ -** 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पूर्वी बंगाल में रशसुंदर देवी एक परम्परागत परिवार की घरेलू विवाहित महिला थीं जिन्होंने रसोईघर में छिपकर पढ़ना सीखा। उन्होंने 'आमार जीवन' नामक आत्मकथा लिखी जो सन् 1876 में प्रकाशित हुई। यह बंगला भाषा में प्रकाशित प्रथम महत्त्वपूर्ण आत्मकहानी थी।

1860 के दशक में कैलाशवासिनी देवी जैसी कई महिला लेखिकाओं ने महिलाओं के अनुभवों पर लिखना प्रारम्भ कर दिया कि कैसे वे घरों में निरक्षर बनाकर रखी जाती हैं, घर के हर काम का बोझ उठाती हैं और जिनकी सेवा करती हैं, वही उन्हें दुत्कारते हैं।

1860 के दशक में महाराष्ट्र में ताराबाई शिंदे और पण्डिता रमाबाई ने उच्च जाति की नारियों विशेषतः विधवाओं की शोचनीय दशा के विषय में जोश और रोषपूर्वक लिखा। तमिल लेखिकाओं ने भी नारी के निम्न स्तरीय जीवन के विषय में विचार व्यक्त किए।

iii. **हिन्दी लेखन एवं महिलाएँ -** उद्दू, तमिल, बंगला एवं मराठी मुद्रण संस्कृति तो पहले आ चुकी थी परन्तु हिन्दी मुद्रण 1870 के दशक में गम्भीरतापूर्वक प्रारम्भ हुआ। शीघ्र ही इसका एक बड़ा भाग नारी शिक्षा के प्रति समर्पित होने लगा।

iv. **नयी पत्रिकाएँ -** 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में महिलाओं के द्वारा लिखित पत्रिकाएँ लोकत्रिय हुई, जिनमें नारी शिक्षा, विधवा विवाह, विधवा जीवन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन जैसे नियमों पर चर्चा होती थी। कुछ पत्र-पत्रिकाओं ने महिलाओं को गृहस्थी चलाने एवं फैशन के नुस्खे बताने के साथ-साथ कहानियाँ एवं धारावाहिक उपन्यासों के माध्यम से मनोरंजन प्रदान किया।

v. महिलाओं के लिए उपदेश समाज में 20 वीं सदीं के प्रारम्भ में लोकप्रिय लोकमत हित बड़े पैमाने पर छापा गया। रामचड्डा ने महिलाओं को आज्ञाकारी पत्नी बनने का उपदेश देने के उद्देश्य से स्त्री धर्म विचार पुस्तक लिखी। ऐसे ही सन्देशों को लेकर खालसा-पुस्तिका संघ ने सस्ती पुस्तिकाएँ छापीं। इनमें से अधिकांश अच्छी महिला बनने के उपदेशों पर वार्तालाप के रूप में थीं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महिलाओं पर मुद्रण संस्कृति के बहुआयामी प्रभाव पड़े।

21. i. जीवन के धार्मिक क्षेत्र में भी मुद्रण क्रांति का असर देखने को मिला। धर्म प्रचारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 95 रचनाएँ लिखीं।

ii. इसकी एक छपी हुई प्रति विटेनवर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर टांगी गई।

iii. इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी।

iv. जल्दी ही लूथर के लिए बड़ी संख्या में छापे और पढ़े जाने लगे। परिणामस्वरूप चर्च में विभाजन हो गया और प्रौटेस्टेण्ट चर्च सुधार आरंभ हो गया।

v. कुछ ही सप्ताहों में लूथर के न्यू टेस्टामेंट के अनुवाद की 5000 प्रतियाँ बिक गई।

vi. प्रिंट के प्रति आभार प्रकट करते हुए लूथर ने कहा, "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा।" कई इतिहासकारों का ख्याल हैं कि छपाई ने नया बौद्धिक माहौल बनाया और इसमें धर्म-सुधार आंदोलन के नए विचारों के प्रसार में सहायता मिली।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video Course | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App